उत्तराखण्ड की जनांकिकी का आलोचनात्मक अध्ययन

मनोज पाण्डे,
शोधार्थी, वाणिज्य,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सारांश

वतमान में दुनिया के सभी देश तीव्र आथिक विकास हेतु अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम एवं सतत उपयोग कर जीवन स्तर को बेहतर करने के प्रति प्रयासरत हैं। इस हेतु वह देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से सम्यक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। उन कारकों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है जो जनांकिकी में परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। जनांकिकी में परिवर्तन के लिए देश के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्व महत्वपूर्ण हो जाते हैं। किसी भी समाज की संरचना को समझने के लिये जनांकिकी एक महत्वपूर्ण कारक होता है।यही कारण है कि इसके अध्ययन से हमें उस स्थान विशेष की जनसंख्या की विशेषताओं की स्पष्ट जानकारी हो पाती है। दो स्थानों की जनसंख्या समान होने पर भी उनमें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भिन्नता हो सकती है। यही कारण है कि जनांकिकी आज अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों तथा शिक्षाविदों के अध्ययन का व्यापक अंग बन गया ह।

प्रस्तुत कार्य द्वारा नवसृजित उत्तराखंड राज्य की जनांकिकी का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है जिससे उत्तराखंड की जनसँख्या की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रति उत्तराखंड के विविध आयामों पर शोध कार्य करने वाले शोधाथियों को नवीन अंतदृष्टि प्राप्त हो सके।

प्रस्तावना

भारतीय हिमालयी राज्यों के संदर्भ में किसी भी प्रकार से संवेदन”ाील होने के लिए, सर्वप्रथम हमें उसमें रहने वाले मानव संसाधन के जीवन और जीविका के लिए संवेदन”ाील होना होगा। इसके बिना यहां के मानव संसाधन के जनजीवन को सुचारू और सतत्ता प्रदान नहीं की जा सकती है और इसके बिना हिमालय की प्रासंगिकता नहीं है। अतः हिमालय को सही अर्थों में तभी परिभाशित किया जा सकता है जब उसके भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्वरूप के साथ ही उसके मानव संसाधन की समग्र तथा सामयिक व्याख्या की जाय। वतमान में दुनिया के सभी देश तीव्र आथिक विकास हेतु अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम एवं सतत उपयोग

कर जीवन स्तर को बेहतर करने के प्रति प्रयासरत हैं। इस हेतु वह देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से सम्यक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। उन कारकों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है जो जनांकिकी में परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। जनांकिकी में परिवर्तन के लिए देश के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्व महत्वपूर्ण हो जाते हैं। किसी भी समाज की संरचना को समझने के लिये जनांकिकी एक महत्वपूर्ण कारक होता है। यही कारण ह कि इसके अध्ययन से हमें उस स्थान विशेष की जनसंख्या की विशेषताओं की स्पष्ट जानकारी हो पाती है। दो स्थानों की जनसंख्या समान होने पर भी उनमें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भिन्नता हो सकती है। यही कारण है कि जनांकिकी आज अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियां तथा शिक्षाविदों के अध्ययन का व्यापक अंग बन गया ह।

प्रस्तुत कार्य द्वारा नवसृजित उत्तराखंड राज्य की जनांकिकी का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है जिससे उत्तराखंड की जनसँख्या की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रति उत्तराखंड के विविध आयामों पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों को नवीन अंतदृष्टि प्राप्त हो सके।

उत्तराखण्ड की जनांकिकी

उत्तराखण्ड, राज्य अपनी भौतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विशिष्टताओं का एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न करता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में उत्तराखण्ड को एक धार्मिक क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है, तथा धर्मग्रन्थों में इसे देवताओं और मनीषियों की पुण्यभूमि कहा गया है। पौराणिक साहित्य में गढ़वाल क्षेत्र को केदारखण्ड तथा कुमायूँ क्षेत्र को मानस खण्ड कहा गया है, जिनकी विभाजन रेखा नन्द पर्वत है। उत्तराखण्ड का विस्तार $28^0 43'$ उत्तरी अक्षांश से $31^0 27'$ उत्तरी अक्षांश तथा $77^0 34'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य लगभग 53,483 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर विस्तृत है। भौगोलिक क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत में उत्तराखण्ड का 18वां स्थान है।[1]

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार उत्तराखण्ड़ की जनसंख्या एक करोड एक लाख सोलह हजार सात सौ बावन (1,01,16,752) हो गयी है, जो कि देश की कुल जनसंख्या का 0.84 प्रतिशत है। उत्तराखण्ड राज्य की जनसंख्या का जनपदवार विवरण निम्नवत प्रस्तुत किया गया है–

उत्तराखण्ड की जनसंख्या[2.3]

जिला का नाम	जनगणना 2001					जनगणना 2011				
	पुरूश	महिला	कुल जनसंख्या	द"ाकीय वृद्धि (%)	घनत्व वर्ग किमी.	पुरूश	महिला	कुल जनसंख्या	द"ाकीय वृद्धि (%)	घनत्व वर्ग किमी.
उत्तरका"ाी	1,52,016	1,42,997	2,95,013	22.72	37	1,68,335	1,61,351	3,29,686	11.75	41
चमोली	1,83,745	1,86,614	3,70,359	13.51	48	1,93,572	1,97,542	3,91,114	5.60	49
रूद्रप्रयाग	1,07,535	1,19,904	2,27,439	13.44	120	1,11,747	1,25,110	2,36,857	4.14	119
टिहरी	2,95,168	3,09,579	6,04,747	16.15	148	2,96,604	3,19,805	6,16,409	1.93	169
देहरादून	6,79,583	6,02,560	12,82,143	24.71	414	8,93,222	8,05,338	16,98,560	32.48	550
पौड़ी	3,31,061	3,66,217	6,97,078	3.87	129	3,26,406	3,60,121	6,86,527	-1.51	129
हरिद्वार	7,76,021	6,71,166	14,47,187	26.30	612	10,25,428	9,01,601	19,27,029	33.16	849
पिथौराग ढ़	2,27,615	2,34,674	4,62,289	10.92	65	2,40,427	2,45,566	4,85,993	5.13	69
बागेश्वर	1,17,374	1,29,789	2,47,163	9.21	108	1,24,121	1,35,719	2,59,840	5.13	116
चम्पावत	1,11,084	1,13,458	2,24,542	17.56	126	1,30,881	1,28,434	2,59,315	15.49	147
नैनीताल	4,00,254	3,62,655	7,62,909	32.88	198	4,94,115	4,61,013	9,55,128	25.20	225
ऊधमसिंह नगर	6,49,484	5,86,130	12,35,614	27.79	424	8,58,906	7,89,461	16,48,367	33.40	648
अल्मोड़ा	2,94,984	3,37,882	6,32,866	3.14	205	2,90,414	3,51,513	6,21,927	-1.73	198
कुल/औसत	43,25,724	41,63,425	84,89,349	20.41	203	51,54,178	49,62,574	1,01,16,752	19.17	255

राज्य की कुल जनसंख्या में पुरुशों एवं महिलाओं का अनुपात क्रम"ाः 50.95 प्रति"ात तथा 49.05 प्रति"ात है। गत एक द"ाक में पलायन के बाद भी राज्य की जनसंख्या में लगभग 16 लाख की वृद्धि हुई है। इस प्रकार उत्तराखण्ड़ की जनसंख्या में प्रत्येक वर्ष औसतन लगभग डेढ़ लाख की वृद्धि हुई है, किंतु राज्य की कुल जनसंख्या में हुई इस वृद्धि के प"ाात भी यहाँ के अल्मोड़ा और पौड़ी जनपदों की जनसंख्या में गत एक द"ाक में दस–दस हजार की कमी आई है। इस अवधि में राज्य की कुल जनसंख्या में 19.17 की वृद्धि हुई वहीं पौड़ो जनपद का जनसंख्या घनत्व कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। जनपद अल्मोड़ा में यह घनत्व 201 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से घटकर 198 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर रह गया है।[4] राज्य के पर्वतीय जनपदों में जहाँ प्रायः द"ाकीय जनसंख्या की वृद्धि दर या तो कम रही है या फिर उसमें कमी आई है, वहीं मैदानी जनपदों की जनसंख्या में बेतहा"ाा वृद्धि हुई है। हरिद्वार में वर्श 2001 में जो जनसंख्या घनत्व 612 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की दर से राज्य में सर्वाधिक था, वह अब 849 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गया है। अतः हरिद्वार के जनसंख्या घनत्व में 237 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार ऊधमसिंह नगर के जनसंख्या घनत्व में भी 162 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। वर्श 2001 में यह 424 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर था, जो 2011 में बढ़कर 648 प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गया है। पहाड़ी जनपदों में चम्पावत में सर्वाधिक 20 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि में भी सम्भवतः

जनपद के मैदानी क्षेत्र टनकपुर का सर्वाधिक योगदान है। इसके अलावा चमोली और टिहरी में 3–3, उत्तरका"ाी, पिथौरागढ़ और रूद्रप्रयाग में 4–4 तथा बागे"वर में 6 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।[5] परन्तु राज्य के विभिन्न जनपदों में जनसंख्या धनत्व के सम्बन्ध में 41 से 849 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 का भारी बिखराव व्याप्त है जिसका प्रमुख कारण यहॉ की भौगोलिक संरचना में विविधता के चलते सुचारू जीवन और जीविका के निर्वहन में कठिनाई हाना है। उत्तराखण्ड की जनसंख्या का अधिक गहनता से अध्ययन करने पर यह स्पश्ट होता है कि राज्य की जनांकिकी बेहद चिंताजनक स्थिति का संकेत दे रही है, क्योंकि इस अवधि में राज्य में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 1991–2001 के 20.41 प्रतिशत के सापेक्ष वर्ष 2001–2011 में 19.17 प्रतिशत ही रही है। राज्य के दो पर्वतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जनपद अल्मोड़ा तथा पौड़ी में तो यह दर ऋणात्मक (–1.73% तथा –1.53 %) हो गयी है। यहाँ के दो पूर्ण मैदानी जनपदों हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर तथा दो आं"ाक पहाड़ी जनपदों नैनीताल और देहरादून की कुल जनसंख्या राज्य के अन्य 9 पहाड़ी जनपदों के बराबर है। इन चार जनपदों में 62 लाख 29 हजार से अधिक लोग निवास करते हैं। इसमें भी हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर में ही लगभग 36 लाख लोग रहते हैं, अर्थात राज्य की कुल जनसंख्या का एक तिहाई से भी अधिक भाग इन दो जनपदों में ही रहता है। इस प्रकार उत्तराखण्ड की जनसंख्या के विश्लेषण से स्पष्ट है कि यहाँ पर्वतीय क्षेत्र के जनपदों से मैदानी एवं सुगम क्षेत्रों की ओर जनसंख्या की प्रवासिता प्रवृत्ति में तेजी से वृद्धि हुई है, जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र के युवाओं का रोजगार की तलाश में देश के बड़े शहरों तथा राज्य के मैदानी जनपदों में जाना रहा है।[6] उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में आज सामान्य रूप से महिलाओं, वृद्धों एवं बच्चों की संख्या ही अधिक पायी जाती है।

यदि लिंगुपात की दृष्टि से देखे तो वर्तमान में उत्तराखण्ड का लिंग अनुपात 963 है, जो भारत के लिंगुपात (940) की तुलना में अधिक है।[7] यहॉ गौर करने वाला तथ्य यह है कि विगत द"ाक में ऋणातमक जनसंख्या वृद्धि दर वाले अल्मोड़ तथा पौड़ी सहित सात पूर्ण पर्वतीय जनपदों में यह अनुपात 1000 से भी अधिक है जबकि मैदानी (हरिद्वार 880 व उधम सिंह नगर 920) एवं अर्ध पर्वतीय (देहरादून 902 व नैनीताल 934) जनपदों में राश्ट्रीय औसत से भी कम है।[8] इसका कारण पर्वतीय क्षेत्रों से रोजगार की तला"ा में युवाओं का पलायन एवं स्थानीयों में कन्या भ्रूण हत्या के प्रति अरूचि होना है। इसी प्रकार वर्तमान में राज्य की साक्षरता का स्तर 79.63 प्रति"ात है, जिसमें पुरूष साक्षरता 83.30 प्रति"ात तथा महिला साक्षरता 59.60 प्रति"ात है। उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या का लगभग 69.44 प्रति"ात ग्रामीण

क्षेत्रों में तथा भोष मैदानी क्षेत्रों में निवास करता है[9]। अतः उपरोक्त जनसंख्यात्मक विश्लेषण से स्पष्ट है कि यद्यपि विगत दशक में उत्तराखंड में विगत द"ाक में जनसंख्या वृद्धि तो हुई है, किन्तु यह वृद्धि राज्य के मैदानी क्षेत्र के जनपदों में ही अधिक हुई है। पलायन के कारण पर्वतीय क्षेत्रों के लगभग 4,000 जनजीवन विहीन गॉवों को भुतहा कहा जाने लगा है जबकि पृथक पर्वतीय राज्य उत्तराखंड की मांग के पीछे पलायन को रोकना एक प्रमुख प्रर्वतक कारण था।

उत्तराखण्ड का सामाजिक स्वरूप, देश के अन्य राज्यों की भांति विभिन्न धर्मावलम्बियों के मध्य सद्भावना, प्रेम एवं सामंजस्य का प्रतिरूप है। यद्यपि उत्तराखण्ड में हिन्दुओं का बाहुल्य है, तथापि मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध एवं अन्य धर्मों के निवासी यहाँ मिल–जुलकर रहते हैं।

धर्म के आधार पर उत्तराखंड की जनसंख्या (जनगणना 2011)[10]

क्र.स..	धर्म	जनसंख्या	प्रति"ात
1	हिन्दू	83,93,869	82-97%
2	मुसलमान	14,11,287	13-95%
3	ईसाई	37,431	0-37%
4	सिख	236731	2-34%
5	बौद्ध	15175	0-15%
6	जैन	9105	0.09%
7	अन्य जातीय धर्म	1011	0.01%
8	अन्य	12140	0.12%
9	योग	10116752	100.00%

उत्तराखण्ड की सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिये धार्मिक व्यवस्था के साथ–साथ जाति–प्रथा को जानना भी आवश्यक है। वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के अनुसार हिन्दु जाति चार वर्णो में विभक्त थी, किन्तु कालान्तर में जातियों से अनेक उपजातियों का अविर्भाव हुआ और कई जाति–संगठन बनते चले गये। कहीं भी जो जाति समुदाय बसे, वह उसी गाँव के नाम से जाति–संज्ञक हो गये। यद्यपि यह जाति–संज्ञा परिवर्तन पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से हुआ, किंतु उनके गोत्र, प्रवर शाखा और दूसरी धार्मिक मान्यताओं में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। जहाँ तक उत्तराखण्ड की जाति–प्रथा का सम्बन्ध है, इस राज्य के पर्वतीय अंचलों में प्रमुख रूप से क्षत्रिय और ब्राह्मण निवास करते हैं, जो क्षेत्र, कालखंड आदि के आधार पर अनेक उपजातियों व उपवर्गों में भी विभक्त हैं।

इतिहास वेत्ताओं का यह भी मानना है कि शिल्पकार इस क्षेत्र के मूल निवासी हैं, जो प्राचीन जातियों–किरात, पुलिंद, तंगण आदि के ही वंशज हैं। ब्राह्मण और क्षत्रियों की तरह इनमें भी वर्ग हैं तथा विभिन्न व्यवसायों के अनुसार ही इनकी उपजातियों के भी विशिष्ट नाम हो गये हैं। कोली, टमटा, ओड, आगरी, लुहार, रूड़िया आदि अपने–अपने शिल्प कौशल में दक्ष होते हैं।[11] टमटा तांबे के कलात्मक बर्तन बनाने में, ओड भवन–निमाण में तथा रूड़िया बासं –रिंगाल की टोकरियाँ और कंडियाँ आदि बनाने में सिद्धहस्त होते हैं। इसी प्रकार औजी कपड़ा सिलने तथा शुभ अवसरों में ढोल–दमी बजाने में प्रवीण होते हैं।[12] सामाजिक जाग्रति एवं व्यावसायिक परिवर्तनों की दौड़ में अधिकतम शिल्पकार अब अपना मूल कार्य छोड़कर समाज की मुख्य धारा में अपनी योग्यताओं के अनुसार विभिन्न व्यवसाय तथा अन्य कार्य कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड में अनेक जनजातियाँ भी सैंकड़ों वर्षों से रहती आ रही हैं। विद्वानों का मत यह भी है कि ये जनजातियाँ ही यहाँ की मूल निवासी हैं। राज्य मं पाँच अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं, जबकि गैर अनुसूचित कोई भी जनजाति वर्तमान में राज्य में निवास नहीं करती है। राज्य की ये अनुसूचित जनजातियाँ हैं– थारू, भोटिया, जौनसार, बोक्सा व राजि। थारू जनजाति ऊधमसिंह नगर के खटीमा व सितारगंज के 144 गाँवों में निवास करती है।[13] भोटिया जनजाति पिथौरागढ़ जनपद के जौहार परगना, चमोली के तल्ला–मल्ला हिमखंड पट्टियों व उत्तरकाशी जनपद की भटवाड़ी तहसील के लगभग 291 गाँवों में निवास करती है। जौनसार की अधिकांश जनजाति जनसंख्या चकराता तहसील के कालसी–चकराता भू–भाग पर निवास करती है। ऊधमसिंह नगर, नैनीताल, देहरादून तथा पौड़ी गढ़वाल के तराई क्षेत्र में बोक्सा जनजाति का निवास है। राजि जनजाति राज्य की अल्पविदित जनजाति है जो पिथौरागढ़ जनपद के धारचूला, डीडीहाट तथा चम्पावत जनपद के भीतरी जंगलों एवं उसके आस–पास के 9 गाँवों में निवास करती है। उत्तराखण्ड में अन्य पिछड़ा वर्ग से सम्बधित जातियों के लोग सामान्यतः यहाँ के मैदानी क्षेत्रों में ही निवास करते हैं, जो सामान्यतः अविभाजित उत्तर–प्रदे”ा के हरिद्वार जनपद के निवासी हैं। पर्वतीय क्षेत्र में इनकी संख्या लगभग नगण्य है। प्रदे”ा सरकार को आरक्षण नीति के अनुसार अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों को 14 प्रति”ात आरक्षण की व्यवस्था है।

विगत लगभग पांच द"ाकों से हिमालयी राज्यों में वै"वक तापीकरण के कारण प्राकृतिक आपदाओं (भूकंप, भूस्खलन, बाढ़, वनाग्नि, बादल फटना आदि) की आवृत्ति बढ़ी है तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या के कारण मौसम चक्र में बदलाव तथा अनियमित वर्शा से कृशि चक्र में परिवर्तन के साथ ही हिमालयी क्षेत्रों के ही नहीं वरन पूरे दे"ा के किसान प्रभावित हुए हैं। इसके साथ ही वन अधिनियम, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम आदि के प्रावधानों का परिपालन, वृहत स्तरीय जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना से विस्थापन आदि कारणों से हिमालयी राज्यों के निवासियों का जीवन और जीविका संकट में आयी है क्योंकि उनका वहां के जल, जंगल और जमीन पर अधिकार या तो रह नहीं गया है या सीमित हो गया है। हिमालयी राज्यों में रोजगार के साधनों का अभाव होने के कारण उनकी कार्य"ील श्रम"ाक्ति को वर्श भर काम नहीं मिल पाता है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी आर्थिकी पर पड़ता है और इस कारण संपूर्ण हिमालय क्षेत्र वि"ोशकर उसके सीमांत क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में पलायन हो रहा है। उत्तराखण्ड सरकार के ऑकड़ों के अनुसार पृथक उत्तराखण्ड राज्य के गठन के बाद से उत्तराखण्ड के 2 लाख 80 हजार से अधिक घरों में ताले लग चुके हैं। एक गैर सरकारी संस्था 'पलायन' के अनुसार राज्य गठन के प"चात 16 वर्शों में 32 लाख लोगों ने पहाड़ से पलायन किया है। उत्तराखण्ड में 'गांव बचाओं आंदोलन के प्रणेता पद्मश्री अनिल जो"ाी के अनुसार राज्य गठन के प"चात 3600 से अधिक गांव पूर्णतः जनजीवनविहीन (भूतहा) हो गये हैं।इन गांवों ऐसे हजारों गांव सम्मिलित नहीं हैं, जहां गॉववासी कभी–कभी घास , लकड़ी बीनने या लोक देवीदेवताआं को पूजने जाते हैं परन्तु वहीं रहते नहीं हैं। पिछले द"ाक में उत्तराखण्ड के कुल 13 जनपदों में से 9 पर्वतीय जनपद पलायन से सर्वाधिक प्रभावित रहे हैं। पौड़ी तथा अल्मोडा जनपदों में तो इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि दर भी ऋणात्मक हो गयी है। इन परिस्थितिया में यह और भी चिंताजनक है कि भारत के हिमालयी राज्यों में पलायन की दर सर्वाधिक उत्तराखण्ड (25 प्रति"ात) में ही है।

निष्कर्ष

उत्तराखंड राज्य की जनांकिकी का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि गत एक द"ाक में पलायन के बाद भी राज्य की जनसंख्या में लगभग 16 लाख की वृद्धि हुई है। उत्तराखण्ड़ की जनसंख्या में प्रत्येक वर्ष औसतन लगभग डेढ़ लाख की वृद्धि हुई ह। राज्य के पर्वतीय जनपदों में जहाँ प्रायः द"ाकीय जनसंख्या की वृद्धि दर या तो कम रही है या फिर उसमें कमी आई है, वहीं मैदानी जनपदों की जनसंख्या में बेतहा"ाा वृद्धि हुई है। राज्य की जनांकिकी बेहद चिंताजनक स्थिति का संकेत दे रही है। यहाँ पर्वतीय क्षेत्र के जनपदों से मैदानी एवं सुगम क्षेत्रों की ओर जनसंख्या की प्रवासिता प्रवृत्ति में तेजी से वृद्धि हुई है, जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र के युवाओं का रोजगार की तलाश में देश के बड़े शहरों तथा राज्य के मैदानी जनपदों में जाना रहा है। उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या का लगभग 69.44 प्रति"ात ग्रामीण क्षेत्रों में तथा भोष मैदानी क्षेत्रों में निवास करता है। उत्तराखण्ड का सामाजिक स्वरूप, देश के अन्य राज्यों की भांति विभिन्न धर्मावलम्बियों के मध्य सद्भावना, प्रेम एवं सामंजस्य का प्रतिरूप है। हिमालयी राज्यों में रोजगार के साधनों का अभाव होने के कारण उनकी कार्य"ाील श्रम"ाक्ति को वश भर काम नहीं मिल पाता है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी आर्थिकी पर पड़ता है और इस कारण संपूर्ण हिमालय क्षेत्र वि"ोशकर उसके सीमांत क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में पलायन हो रहा है।

संदर्भ सूची

[1] Sati, V. P., Kumar, K. (2004). Uttaranchal: Dilemma of Plenties and Scarcities. India: Mittal Publications.
[2] http://gbpihedenvis.nic.in/District%20wise%20Total%20Population%20of%20Uttarakhand-2001.html
[3] http://gbpihedenvis.nic.in/Districts%20wise%20Population%20Uttarakhand,%20Census-2011.html
[4] https://cdn.s3waas.gov.in/s33a0772443a0739141292a5429b952fe6/uploads/2018/04/2018042182.pdf.
[5] Singh, S. (1995). Urbanization in Garhwal Himalaya: A Geographical Interpretation. India: M.D. Publications.
[6] Majumder, B. (2011). Housing on the Hills in India. India: Concept Publishing Company.
[7] Uttarakhand Development Report. (2011). India: Academic Foundation.
[8] https://jansankhya.itshindi.com/rajya/uttarakhand
[9] जनगणना 2011 के आधार पर वि"ोलेशित।
[10] https://www.census2011.co.in/data/religion/state/5-uttarakhand.html
[11] Uttarākhaṇḍa. (1993). India: Uttarākhaṇḍa Śodha Saṃsthāna,..
[12] Global Encyclopaedia of the North Indian Dalits Ethnography (2 Vols. Set). (2007). India: Global Vision Publishing House.
[13] Naswa, S. (2001). Tribes of Uttar Pradesh and Uttranchal: Ethnography and Bibliography of Scheduled Tribes. India: Mittal Publications.